❍ 25 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *योग में रहकर विकर्माजीत बनकर रहे ?*

➢➢ *पवित्रता की राखी सबको बाँधी ?*

➢➢ *नॉलेज की शक्ति द्वारा कर्मेन्द्रियो पर शासन किया ?*

➢➢ *हर समय करन-करावनहार बाबा याद रहा ?*

────────────────────────

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ *ज्ञान मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का, ट्रैफिक कण्ट्रोल का टाइम मुकरर करो। विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम बनाओ।* एकनामी और एकानामी वाले बनो।

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊

✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊ ••☆••✧ ̊ ̊

✺ *"मैं विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सदा विघ्न-विनाशक आत्मा अनुभव करते हो? या विघ्न आये तो घबराने वाले हो? विघ्न-विनाशक आत्मा सदा ही सर्व शक्तियों से सम्पन्न होती है। विघ्नों के वश होने वाले नहीं, विघ्न-विनाशक। कभी विघ्नों का थोड़ा प्रभाव पड़ता है? *कभी भी किसी भी प्रकार का विघ्न आता है तो स्मृति रखो कि-विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्नविनाशक बनना। जब नाम है विघ्न-विनाशक, तो जब विघ्न आयेगा तब तो विनाश करेंगे ना।* तो ऐसे कभी नहीं सोचना कि हमारे पास यह विघ्न क्यों आता है?

〰✧ विघ्न आना ही है और हमें विजयी बनना है। तो विघ्न-विनाशक आत्मा कभी विघ्न से न घबराती है, न हार खाती है। ऐसी हिम्मत है? क्योंकि जितनी हिम्मत रखते हैं, एक गुणा बच्चों की हिम्मत और हजार गुणा बाप की मदद। तो जब इतनी बाप की मदद है तो विघ्न क्या मुश्किल होगा? *इसलिए कितना भी बड़ा विघ्न हो लेकिन अनुभव क्या होता है? विघ्न नहीं है लेकिन खेल है। तो खेल में कभी घबराया जाता है क्या? खेल करने में खुशी होती है ना! ऐसे खेल समझने से घबरायेंगे नहीं लेकिन खुशी-खुशी से विजयी बनेंगे।*

〰✧ सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को 'नथिंग न्यु' समझेगा। नई बात नहीं, बहुत पुरानी है। कितने बार विजयी बने हो? (अनेक बार) याद है या ऐसे ही कहते हो? सुना है कि ड्रामा रिपीट होता है, इसीलिए कहते हो या

समझते हो अनेक बार किया है? *अगर ड्रामा की पॉइंट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है, तो उस निश्चय के प्रमाण हू-ब-हू जब रिपीट होता है, तो अनेक बार रिपीट हुआ है और अब रिपीट कर रहे हैं। लेकिन निश्चय की बात है।* अगले कल्प में और कोई विजयी बने और इस कल्प में आप विजयी बनो- यह हो नहीं सकता। क्योंकि जब बना-बनाया ड्रामा कहते हैं, तो बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सभी ब्रहमाकुमार और कुमारियों का विशेष कर्तव्य क्या है? ब्रहमा बाप का विशेष कर्तव्य क्या है? *ब्रहमा का कर्तव्य ही है - नई दुनिया की स्थापना।* तो *ब्रहमाकुमार और कुमारियों का विशेष कर्तव्य क्या हुआ?*

〰✧ *स्थापना के कार्य में सहयोगी।* तो जैसे अमेरिका में विनाशकारियों के विनाश की स्पीड बढ़ती जा रही है। ऐसे स्थापना के निमित बच्चों की स्पीड भी तीव्र है? वे तो बहुत फास्ट गति से विनाश के लिए तैयार है।

〰✧ ऐसे आप सभी भी स्थापना के कार्य में इतने एवररेडी तीव्र गति से जा

रहे हो? उन्हों की स्पीड तेज है या आपकी तेज है? *वो 15 सेकण्ड में विनाश के लिए तैयार है और आप - एक सेकण्ड में?* क्या गति है?

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *आप प्रभु प्रेमी बच्चों ने त्याग किया वा भाग्य लिया? क्या त्याग किया? अनेक चतिया लगा हुआ वस्त्र,* जड़जड़ीभूत पुरानी अन्तिम जन्म की देह का त्याग, यह त्याग है? *जिसे स्वयं भी चलाने में मजबूर हो, उसके बदले फ़रिश्ता स्वरूप लाइट का आकार जिसमें कोई व्याधि नहीं, कोई पुराने संस्कार स्वभाव का अंश नहीं, कोई देह का रिश्ता नहीं, कोई मन की चंचलता नहीं, कोई बुद्धि के भटकने की आदत नहीं - ऐसा फ़रिश्ता स्वरूप, प्रकाशमय काया प्राप्त होने के बाद पुराना छोड़ना, यह छोड़ना हुआ? लिया क्या और दिया क्या?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

——————————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पवित्रता का कंगन बांध, पावन बनने की प्रतिज्ञा करना"*

➳ _ ➳ आज मै आत्मा मा त्रिलोकीनाथ के नशे में डूबी हुई... तीनो लोको को स्म्रति पटल पर देख रही हूँ... और देखते देखते मै आत्मा अपने सूक्ष्म शरीर को लिए... इस स्थूल धरा के आवरण से निकल कर... सूक्ष्म वतन में अपने प्यारे बाबा से मिलने को उड़ चली हूँ... सूक्ष्म वतन में पहुंच कर मै आत्मा मीठे बाबा की बाँहों में समा जाती हूँ... और *दीवानी आत्मा और माशूक परमात्मा के सच्चे प्रेम की धारा से सूक्ष्म वतन तरंगित हो रहा है.*..

❉ *मीठे बाबा सामने खड़े ज्ञान की अमूल्य मणियो को मेरी झोली में छलकाते हुए कहने लगे :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... देह और देह की दुनिया के आकर्षणों से निकल सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करो... *यह पवित्रता ही स्वर्गिक सुखो का आधार है.*.. पवित्रता का कंगन बांध पावन बनने की द्रढ़ प्रतिज्ञा करो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को रोम रोम से शुकिया कहते हुए बोली :-* "मेरे मीठे बाबा,.. आपने जीवन में आकर जीवन को पवित्रता की खूबसूरती से सजाया है... इसके पहले तो मै आत्मा अपवित्रता की दुर्गन्ध में डूबी हुई थी... *आपने मुझे पावनता से सजाकर, महान भाग्यशाली बना दिया है.*.."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को पावनता के श्रंगार से खुबसूरत बनाते पुनः बोले ;-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... हर साँस और संकल्प को पवित्रता के रंग में रंगकर देवताई राजतिलक के अधिकारी बनो... *पवित्रता ही देवताओ का सौंदर्य है.*.. इसलिए दिल जान से इस पावनता की प्रतिज्ञा को निभाओ..."

➳ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अनमोल शिक्षाओ को दिल में समाते हुए

कह रही हूँ :-* "ओ मीठे बाबा मेरे... आपने मुझ आत्मा को देह के दलदल से निकाल, दिव्यता से सजाकर, कितना प्यारा और खुशबूदार बना दिया है... मै आत्मा *पावनता की सुगन्ध लिए स्वर्ग धरा पर विचरण कर रही हूं.*.."

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को अपने वरदानी हाथो में थाम प्रेम किरणों से भरपूर करते हुए बोले :-* " मीठे लाडले बच्चे... पवित्रता ही देवताओ सा सुखमय और अथाह खुशियो और आनन्द से भरपूर जीवन की आधारशिला है... *विश्व का राज्य भाग्य इस पवित्रता की धारणा पर ही पा सकते हो..*. इसलिए पावनता से सजधज कर देवताई खुशियो में झूम जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को परम् शिक्षक रूप में पाकर अपने मीठे भाग्य पर नाज करते हुए कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... देह की मिटटी ने मुझ आत्मा को जो मैला कर दिया... आपने पावनता से उसे धो दिया है... और *वही तेज और ओज देकर मुझ आत्मा को दिव्यता के रंग से निखार दिया है.*..अपने बाबा से ऐसी मीठी रुहरिहानं कर मै आत्मा स्थूल जगत मे लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- योग में रह विकर्माजीत बनना है*"

➳ _ ➳ 63 जन्मो के विकर्मो का बोझ जो आत्मा के ऊपर है उसे भस्म करने और स्वयं को विकर्माजीत बनाने के लिए मैं आत्मा बिंदु बन परमधाम में अपने बिंदु बाप के सानिध्य में जा कर बैठ जाती हूँ। *5 तत्वों से परे लाल सुनहरी प्रकाश से प्रकाशित यह दुनिया बहुत ही निराली और असीम शांति से भरपूर करने वाली है। यहाँ आकर मैं गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ*। संकल्पो की भी यहाँ कोई हलचल नही। अपनी ओरिजनल बीजरूप अवस्था में स्थित हो कर बीजरूप परमात्मा बाप के साथ का यह मंगल मिलन मुझे

अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करवा रहा है। चित को चैन और मन को आराम दे रहा है।

➳ _ ➳ ज्ञानसूर्य शिव बाबा सर्वशक्तियों की ज्वलंत किरणों को निरन्तर मुझ बिंदु आत्मा पर प्रवाहित कर, मुझ आत्मा के ऊपर चढ़े हुए विकारों के किचड़े को जला कर भस्म कर रहे है। *बाबा से आ रही सर्वशक्तियों की अनन्त किरणे चक्र की भांति गोल - गोल घूमती हुई मेरे पास आ रही हैं। जैसे - जैसे इन किरणो का दायरा बढ़ता जा रहा है इनके आगोश में मैं गहराई तक समाती जा रही हूँ*। मेरे चारों ओर फैले सर्वशक्तियों के इस गोल चक्र ने जैसे ज्वाला स्वरूप धारण कर लिया है। ऐसा लग रहा है जैसे मेरे चारों तरफ योग अग्नि की बहुत ऊँची - ऊँची लपटे निकल रही हैं जिसकी तपिश से मेरे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार जल कर भस्म हो रहें हैं और *मेरी खोई हुई सर्वशक्तियाँ पुनः जागृत हो रही हैं। मेरे सारे विकर्म भस्म हो रहें हैं*।

➳ _ ➳ आत्मा में पड़ी खाद जैसे - जैसे योग अग्नि में जल रही है, विकर्म विनाश हो रहें हैं वैसे - वैसे मैं आत्मा हल्की और चमकदार बनती जा रही हूँ। सोने के समान चमकता हुआ मेरा स्वरूप मुझे बहुत ही प्यारा और न्यारा लग रहा है। *कभी मैं अपने इस जगमग करते ज्योतिर्मय स्वरूप को देखती हूँ तो कभी अनन्त प्रकाशमय, सर्वशक्तियों के सागर अपने शिव पिता को*। इस अलौकिक मिलन की मस्ती में डूबी मैं एकटक अपने प्यारे बाबा को निहार रही हूँ और अपने प्यारे परमात्मा के सानिध्य में स्वयं को धन्य - धन्य अनुभव कर रही हूँ। *वाह मैं आत्मा, वाह मेरे बाबा, जो मुझे अपनी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रहे है यही गीत गाती मैं इस अलौकिक मिलन का भरपूर आनन्द ले रही हूँ*।

➳ _ ➳ अपने स्वीट बाबा से स्वीट साइलेन्स होम में मधुर मंगल मिलन मनाकर, योग अग्नि में विकर्मो को भस्म करके, डबल लाइट बन कर अब मैं वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ। *साकारी दुनिया में अपने साकार ब्राह्मण तन में अब मैं आत्मा विराजमान हूँ। बाबा की याद से विकर्मो पर जीत प्राप्त कर, विकर्माजीत बनने के लिए अब मैं अपने हर कर्म पर पूरा अटेंशन रखती हूँ*। स्वयं को स्वराज्य अधिकारी की सीट पर स्थित कर अब मैं हर रोज

कर्मेन्द्रिय रूपी मंत्रियों की राजदरबार लगाती हूँ और उन्हें उचित निर्देश देकर अपनी इच्छानुसार उनसे हर कार्य करवाती हूँ।

➽ _ ➽ कर्मेन्द्रीयजीत बन कर्म करने से पिछले अनेक जन्मों के आसुरी स्वभाव संस्कार जो विकर्मो का कारण बन रहे थे वे सभी आसुरी स्वभाव संस्कार अब परिवर्तन हो रहे हैं। *तीन बिंदियों की स्मृति का तिलक अब मैं अपने मस्तक पर सदा लगा कर रखती हूँ जिससे मुझे निरन्तर यह स्मृति रहती है कि मुझे कर्मेन्द्रियों से ऐसा कोई पाप कर्म नही करना जिससे विकर्म बने*। अमृतवेले से रात तक बाबा की जो भी श्रीमत मिली हुई है उस पर एक्यूरेट चलने से और बाबा की याद में रह हर कर्म करने तथा स्वयं को सदा योग भट्टी में अनुभव करने से अब विकर्मों के खाते बन्द हो रहे हैं और मैं सहज ही विकर्माजीत बनती जा रही हूँ।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं नॉलेज की शक्ति द्वारा कर्मेन्द्रियों पर शासन करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सफल आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा हर समय करन-करावनहार बाबा को याद रखती हूँ ।*

✺ *मैं आत्मा मैं पन का अभिमान आने से सदा मुक्त हूँ ।*

✺ *मैं निर्मानचित्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति से व्यर्थ के किचड़े को समाप्त करो:- सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा समझते हो? *सर्वशक्तिवान अर्थात् समर्थ। जो समर्थ होगा वह व्यर्थ के किचड़े को समाप्त कर देगा*। मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् व्यर्थ का नाम निशान नहीं। *सदा यह लक्ष्य रखो कि - 'मैं व्यर्थ को समाप्त करने वाला समर्थ हूँ*'। जैसे सूर्य का काम है किचड़े को भस्म करना। अंधकार को मिटाना, रोशनी देना। तो इसी रीति मास्टर ज्ञान सूर्य अर्थात् - व्यर्थ किचड़े को समाप्त करने वाले अर्थात् अंधकार को मिटाने वाले।

➳ _ ➳ *मास्टर सर्वशक्तिवान व्यर्थ के प्रभाव में कभी नहीं आयेगा*। अगर प्रभाव में आ जाते तो कमजोर हुए। बाप सर्वशक्तिवान और बच्चे कमजोर! यह सुनना भी अच्छा नहीं लगता। कुछ भी हो - लेकिन सदा स्मृति रहे -"मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ"। ऐसा नहीं समझो कि मैं अकेला क्या कर सकता हूँ.. एक भी अनेकों को बदल सकता है। तो स्वयं भी शक्तिशाली बनो और औरों को भी बनाओ। जब एक *छोटा-सा दीपक अंधकार को मिटा सकता है तो आप क्या नहीं कर सकते*! तो सदा वातावरण को बदलने का लक्ष्य रखो। विश्व परिवर्तक बनने के पहले सेवाकेन्द्र के वातावरण को परिवर्तन कर पावरफुल वायुमण्डल बनाओ।

✺ *"ड्रिल :- व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तित करना।"*

➳ _ ➳ अष्ट शक्तियों के घेरे में सुरक्षित मैं आत्मा हीरा, देह सहित बैठ गयी हूँ, बाप दादा के चित्र के सामने... बापदादा की आँखों से बहती स्नेह की अविरल धारा प्रकाश की असंख्य धाराओं के रूप में मुझ तक आ रही है... आकाश में बादलों के पीछे से झाँकता सूरज जैसे बादलों को अपने सुनहरे रंग में रंग देता है उसी प्रकार रूहानी रंग से रंगी मेरी ये देह भी अपनी स्थूलता भूल चुकी है... *बस रूह ही बाकी है यहाँ और रूहानियत के पैमाने है... उतर रहा नूर परमधाम से उसका, निर्बाध से ये मयखाने है...* मैं आत्मा हीरा अपने कवच में सुरक्षित तेज गति से उडती हुई पहुँच गयी हूँ परम धाम... गुणों, शक्तियों का शान्त-सा सागर, शिव बिन्दु अनगिनत आत्मा मणियों का गुलदस्ता सजाये, किरणों रूपी लहरों से मानों मेरा आह्वान कर रहा है... मैं आत्मा मणि समाँ जाती हूँ उन किरणों के आगोश में, और आहिस्ता आहिस्ता एकरूप होती जा रही हूँ उन लहरों के साथ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा फरिश्ता रूप में, बादलों के विमान पर सवार होकर बापदादा के साथ विश्व सेवा पर... आहिस्ता आहिस्ता ये विमान उतर गया है सुन्दर शान्त झील के किनारे... झील में मोती चुगते हंसों की पंक्ति... *विवेक बुद्धि से व्यर्थ रूपी कंकड़ अलग कर केवल मोती चुग रहें है...* देखते ही देखते मैं आत्मा हंस रूप धारण कर हंसों की पंक्ति का हिस्सा बन गयी हूँ... बापदादा मुझे देखकर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं... और धीरे से मेरे पास आकर मुझे सर्वशक्तिमान की स्मृति दिला रहे है... मैं फरिश्ता उडकर पहुँच गया हूँ आकाश में और एक ही प्रयास में हाथ बढाकर सूर्य का गोला किसी बॉल की तरह उछालता हुआ बापदादा के सम्मुख उपस्थित हो गया हूँ... कानों में गूँज रहे है बापदादा के वही महावाक्य *एक छोटा सा दीपक अंधकार को मिटा सकता है तो आप क्या नही कर सकते...*

➳ _ ➳ *और मैं अकेला ही निकल गया हूँ संसार के किचडे को भस्म करने, व्यर्थ को समर्थ में बदलने...* झील के उस तरफ देख रहा हूँ... सूखे झाड झाडियाँ, व्यर्थ के कँटीले घास फूस और अज्ञानता की गहन गुफाएँ... बापदादा का इशारा पाते ही सूर्य रूपी गेंद मैंने उछाल दी है उस तरफ... *एक तेज

विस्फोट और तेज ज्वाला के साथ भस्म होता वो सूखा किचडा, प्रकाश में नहा उठी है वो गुफाएँ... वो हृदय रूपी गुफाएँ...* और मैं बापदादा के कन्धे पर बैठकर खुशी से झूमता हुआ... स्वयं की समर्थता का भी जश्न मनाता हुआ, वापस लौट आया हूँ उसी अष्ट शक्तियों के घेरे में सर्वशक्तिमान की गहरी स्मृति के साथ... अष्ट शक्तियों रूपी सेविकाएँ पग-पग पर मेरे इशारों पर मौन नर्तन करती हुई... *हर व्यर्थ को समर्थ करने के पुरूषार्थ में पहले से ज्यादा तल्लीनता के साथ जुटी हुई है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔